Indian J. Soc. & Pol. 05(02):83-92:2018 **ISSN: 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 (Till May 2,2018) **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

जनजातिकरण एवं कुमारभाग पहाड़िया : एक तुलनात्मक मानवशास्त्रीय अध्ययन

संदीप कुमार[1a]
[1a]विश्वविद्यालय मानवशास्त्र विभाग, ति०मॉ० भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

ABSTRACT

वर्त्तमान आलेख पहाड़िया जनजाति के तीन उपवर्गों कुमारभाग पहाड़िया, माल पहाड़िया एवं सौरिया पहाड़िया के संदर्भ में किया गया एक तुलनात्मक अनुभवाश्रित अध्ययन है। इस आलेख में संकलित तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट किया गया है कि समान शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विशेषताओं के बावजूद कुमारभाग पहाड़िया को अति पिछड़े वर्ग में रखा गया है, जबकि माल एवं सौरिया पहाड़िया को अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया गया है। कुमारभाग पहाड़िया समुदाय अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में आने की सभी मानकों के पूरा करती है। अतः इसे इस श्रेणी में अनुसूचित करना आवश्यक है, अन्यथा ये समाज की मुख्यधारा में कभी भी नहीं जुड़ सकेंगें।

***KEY WORDS**: जनजाति, अनुसूचित जनजाति, जनजाति– जाति सततता, विजनजातिकरण, पहाड़िया, माल पहाड़िया, सौरिया पहाड़िया, कुमारभाग पहाड़िया, माँझी,*

झारखंड एवं बिहार राज्यों में रहने वाली पहाड़िया जनजाति बहुत ही पिछड़ी, निर्धन, अशिक्षित, परम्परागत विश्वासों एवं अंधविश्वासों से जकड़ी हुई जनजाति है। इनकी ज्यादातर जनसंख्या असाध्य रोगों से पीड़ित है जो वंशानुगत भी है एवं अस्वास्थ्यकर, संक्रमित परिस्थितियों में रहने के कारण भी इन्हें ग्रसित किए हुए है। इनमें ज्यादातर लोग सभी प्रकार के वंचनों एवं दुर्लभताओं के शिकार होने के कारण समाज की मुख्यधारा से बिल्कुल अलग हैं। सरकार के कल्याणकरी कार्यक्रमों का लाभ इन्हें इनकी अज्ञानता एवं जागरूकता की कमी के कारण नहीं के बराबर प्राप्त हुई है। पहाड़िया तीन उप–विभागों में विभक्त हैं, ये हैं– (क) माल पहाड़िया, (ख) सौरिया पहाड़िया एवं (ग) कुमारभाग पहाड़िया।

इन तीनों की सामाजिक, आर्थिक एवं जैविकीय विशेषताएँ लगभग समान हैं और ये तीनों समान असुविधाओं, समाजजनित अक्षमताओं एवं व्याधियों से जुड़े हुए है। पहाड़िया के तीनों उप–भाग आर्थिक रूप से बहुत पिछड़े हैं साथ ही साथ ऋण–ग्रस्तता से दबे हुए हैं, लेकिन माल पहाड़िया एवं सौरिया–पहाड़िया को अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में रखा गया है जबकि कुमारभाग पहाड़िया को अनुसूचित जनजाति का दर्जा नहीं दिया गया है, बल्कि इन्हें अत्यंत पिछड़ी जाति के अन्तर्गत रखा गया है। इसी परिपेक्ष्य में वर्त्तमान अनुसंधान आलेख – कुमारभाग पहाड़िया का मानवशास्त्रीय अन्वेषण है, इस आलेख में तुलनात्मक रूप से इस विरोधाभास को दर्शाने की कोशिश की गई है।

वर्त्तमान आलेख की अधिक स्पष्टता के लिए निम्न अवधारणाओं के अर्थ को भी स्पष्ट करना आवश्यक है :–

जनजाति–जाति सततता :

'सततता' (नैरन्तर्य) की अवधारणा के जनक रेडफील्ड (1941) रहे हैं, जिन्होंने ग्राम्य–नगरीय सम्बन्धों के विश्लेषण में इस अवधारणा का प्रयोग किया था। बाद में इस अवधारणा का प्रयोग जनजाति और जाति के बीच सम्बन्धों के विश्लेषण में मानवशास्त्रियों ने किया। सर्वप्रथम इस बहस की शुरूआत जनसंख्या अधीक्षकों द्वारा इस मुद्दे को लेकर की गई कि जनजाति की कोटि (कैटिगरी) कहाँ समाप्त होती है और जाति का प्रारंभ कहां से होता है। बहुत पहले सन् 1891 में रिजले ने कहा था कि जनजाति और जाति के बीच सीमा रेखा खींचना कठिन है।'' इसी बहस को मोड़ देते हुए एफ०जी० बैली (1960–61) में जनजाति और जाति में नैरन्तर्य या सांतत्यक को स्वीकार नहीं किया है। उन्होंने इन दोनों को दो आदर्श ध्रुवों पर इनकी व्याख्या करते हुए कहा है कि जहाँ जनजाति का रूप पूर्णतः ''खंडित एकजुटता'' (सेग्मन्टरी सालिडेरिटी) लिये होता है, वहां जाति व्यवस्था ''जैविक एकजुटता'' (ऑर्गनिक सॉलिडैरिटी, पर आधारित होती है।

जनजातिकरण :

किसी समुदाय द्वारा जनजातियों के ऐसे रीति–रिवाजों, कर्मकाण्डों तथा विश्वासों को अपना लेने की प्रक्रिया जनजातिकरण कहलाती है जो उनके अपने रीति–रिवाजों एवं विश्वासों से सर्वथा भिन्न होते हैं। यह प्रक्रिया तब उत्पन्न होने की संभावना रहती है जब तथाकथित सभ्य समाज के व्यक्ति जनजातियों के बीच स्थाई अथवा अस्थाई रूप से रस–बस जाते हैं और सांस्कृतिक सम्पर्क और पर्यावरण के दबाव के कारण धीरे–धीरे जनजातियों के रीति–रिवाजों और विश्वासों को अपना लेते हैं।

वि–जनजातिकरण / जनजातीयताक्षरण :

1: Corresponding Author

पारम्परिक जनजातीय संस्कृति के मूल्यों और जीवन–शैली में बाह्य तत्वों के प्रवेश की विधा को वि–जनजातिकरण या जनजातीयता–क्षरण कहते हैं। इस अवधारणा का प्रयोग जनजातियों में हो रहे सांस्कृतिक परिवर्त्तनों के संदर्भ में इस अर्थ में किया गया है कि जब परम्परागत आदिवासी संस्कृति के आदर्श रूप में जटिलता, विषमरूपता, प्रतिस्पर्द्धा, टकराव और निराशा जैसे नकारात्मक तत्त्वों का प्रवेश होने लगता है, तब यह स्थिति जनजातीयता–क्षरण को उत्पन्न कर देती है।

वि–जनजातिकरण अथवा जनजातीयता–क्षरण का प्रमुख कारण बाहरी आधुनिक संस्कृति के साथ संपर्क है जिसके कारण जनजातियों की सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं में विघटन हो रहा है। इस सांस्कृतिक संपर्क के फलस्वरूप एक जनजाति अपनी पारम्परिक जीवन–शैली और जीवन के प्रतिमानों को छोड़कर दूसरी ऐसी जीवनशैली और प्रतिमान को अपना लेती है, जिसे सामान्यतः आधुनिक जीवन–शैली कहते हैं।

माल पहाड़िया :

माल पहाड़िया झारखंड राज्य के गोड्डा, दुमका, साहिबगंज और पाकुड़ जिले तथा बिहार में बाँका, कटिहार, पूर्णिया जिले में वास करते हैं। भौगोलिक दृष्टि से इनका निवास–स्थान बहुत उपयुक्त नहीं है। इनका इलाका पहाड़ी, जंगली तथा पठारी भाग है। इन्हें अनुसूचित जनजाति का दर्जा प्राप्त है। रिजले ने माल पहाड़िया को द्रविड़ जनजाति माना है। प्रजातीय दृष्टि से इसे प्रोटो ऑस्ट्रो समूह में रखा गया है। बुकानन हेमिल्टन (1807) ने माल पहाड़िया का संबंध मालेर अर्थात् सौरिया पहाड़िया से बतलाया है, किन्तु डाल्टन (1872) का विचार है कि माल पहाड़िया का राजमहल के पहाड़ी लोगों से बिल्कुल ही संबंध नहीं है।

माल पहाड़िया का सामाजिक संरचना पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि इनके बीच गोत्र नहीं पाया जाता है। इनके बीच पारिवारिक विभाजन पाया जाता है। विवाह संबंध के लिए माल पहाड़िया के बीच नातेदरी समूह पर ध्यान दिया जाता है। माल पहाड़िया मातृत्व और पितृत्व दोनों ओर कई पुष्त तक विवाह नहीं करते हैं। इनके बीच परिवार प्राथमिक और मूलभूत सामाजिक इकाई है। माल पहाड़िया भी प्रायः एकल परिवार वाला होता है। इनका परिवार पितृ–सत्तात्मक होता है। पिता घर के मुखिया होते हैं और सम्पत्ति का उत्तराधिकारी पुरूष वर्ग होते हैं, अर्थात् पिता की सम्पत्ति का अधिकारी उनकी मृत्यु के पश्चात् पुत्र ही होते हैं। इनके जीविकोपार्जन का मुख्य साधन शिकार, खाद्य सामग्रियों का संग्रहण और स्थानान्तरित खेती है तथा इसके अलावा वनों से प्राप्त कोंकरी, कुन्दरी, आँवला, शरीफा, प्यार आदि के साथ जलावन की लकड़ियाँ, बाँस, कन्द–मूल इत्यादि है जिन्हें ये हाट–बाजार में बेचकर अपनी आर्थिक स्थिति को ठीक करने का प्रयास करते हैं। इसके अलावा जंगली पहाड़ी ढलानों पर जंगल के भू–भाग का चुनाव कर उस भूमि में बाजरा, मकई, घंघरा बोते हैं और इनकी उपज से भी अपनी आय को बढ़ाने का प्रयास करते हैं। माल पहाड़िया मजदूरी करके भी अर्थोपार्जन करते हैं। कुछ लोग लघु, कुटीर उद्योग से भी कुछ कमाई कर लेते हैं। ये चटाई, खटिया, मचिया, इत्यादि बनाकर हाट–बाजार में बेचते हैं। रोजी–रोटी की तलाश में ये महानगरों की ओर भी रूख करते हैं। इनके जीवन में पशु धन का भी महत्व है। ये गाय–बैल, सूअर और मुरगी पालते हैं। इनके भोजन का मुख्य स्रोत– मकई, घंघरा, वरबट्टी, महुआ आदि है जबकि ये षिकार से प्राप्त खरगोश, वनकुक्कुट, जंगली सुअर इत्यादि का मांस अपने भोजन के रूप में करते हैं।

माल पहाड़िया का मानना है कि मृत्यु जीवन का अंत नहीं है, बल्कि मृत्यु के बाद भी जीवन है। इस प्रकार पुनर्जन्म में भी इनका विश्वास है। यह भी विष्वास है कि इनके मरे हुए पूर्वजों की आत्मा जरूरत के क्षणों में सहायता भी कर सकते हैं। इसलिए प्रत्येक अवसर पर माल पहड़िया अपने पूर्वजों को याद करते हैं और पूर्वजों के अलावा कुल देवता और कुल देवी की भी पूजा करते हैं। इनका सबसे बड़ा देवता धरती माता (ग्राम गोसाईं) है। माघी पूजा भी इनका एक महत्वपूर्ण पूजा माना जाता है।

माल पहाड़िया के बीच राजनैतिक संगठन की इकाई गाँव है। ग्रामीण स्तर पर इनका सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक जीवन संचालित होता है। गाँव का मुखिया माँझी कहलाता है। पहले सरदार को सरकारी मान्यता थी और उन्हें भत्ता दिया जाता था, परन्तु अब सरदार का परम्परागत पद समाप्त हो गया है क्योंकि पंचायती राज–व्यवस्था लागू किये जने के कारण इनके ग्राम वैधानिक पंचायतों के अंग बन गए हैं। सारा काम खुद सरकार करती है। फिर भी माल पहाड़िया के बीच कोई भी विवाद के निपटारे के लिए अधिकांशतः पुरानी पंचायतों का ही सहारा लिया जाता है। ग्रामीणों के लिए पंचायत द्वारा दिए गए फैसले को मानना अनिवार्य हो जाता है। सरकारी पंचायतों में पहाड़िया का प्रतिनिधित्व नहीं के बराबर होने के कारण इनकी अपनी पंचायत में ज्यादा विश्वास रहता है।

सौरिया पहाड़िया :

सौरिया पहाड़िया को अनुसूचित जनजाति के अन्तर्गत रखा गया है। इस समुदाय का निवास स्थान झारखंड राज्य के साहेबगंज, पाकुड़ एवं गोड्डा जिले में है तथा बिहार राज्य के भागलपुर जिले के अन्तर्गत कहलगाँव एवं पीरपैंती प्रखंड में है। इनका कद नाटा, नाक चौड़ी, कपाल दीर्घ, रंग हल्का भूरा तथा बाल हल्के घुंघराले और लहर दार होते हैं।

इनका निवास स्थान लहरदार पहाड़ियों की चोटियों पर तथा जंगल में हरे–भरे पहाड़ी ढलानों पर होते हैं। ये लोग बांस,

खर–पतवार तथा मिट्टी से निर्मित छोटी–छोटी आयताकार झोपड़ियों में रहा करते हैं।

सौरिया पहाड़िया का परम्परागत पोशाक सफेद धोती, गंजी, गमछी है और महिलाओं का परिधान साड़ी, घंघरा एवं परम्परागत आभूषण है। इन समुदाय का परिवार पितृसत्तात्मक और पितृवंशीय होते हैं। इनके बीच एकाकी परिवार की बहुलता होती है तथा संयुक्त परिवार बहुत ही कम देखने को मिलता है। सौरिया पहाड़िया के बीच गोत्र नहीं होता, विवाह निकट के सम्बन्धियों के साथ नहीं किया जाता है।

इनके गाँव का मुखिया माँजिये जिसे दूसरे लोग माँझी कहते हैं। गाँव की पंचायत सभी धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक मतभेदों का निपटारा प्रथागत नियमों के आधार पर करती है। पंचायती राज–व्यवस्था लागू किये जाने के कारण इनके ग्राम वैधानिक पंचायतों के अंग बन गए और इनके परम्परापगत राजनैतिक अधिकार समाप्त हो गए। इन दिनों इनके राजनैतिक जीवन का परम्परागत स्वरूप विखरने की दिशा में है। न्याय के लिए इस समाज के लोग वैधानिक पंचायतों तथा सरकारी न्यायालयों की शरण लेने लगे हैं।

सौरिया पहाड़िया की अर्थव्यवस्था कृषि तथा वनों पर आधारित है। ये मुख्यतः मकई, बाजरा, घंघरा, बोड़ा, अरहर इत्यादि की खेती करते हैं। यह खेती पूर्ण रूप से मानसून पर निर्भर करती है। अनवृष्टि की दशा में इन्हें अकाल का सामना करना पड़ता है।

सौरिया पहाड़िया जंगल में खरगोश, भालू, जंगली सूअर, साहिल इत्यादि का शिकार कर चाव से खाते हैं तथा जंगली सूअर का मांस का बिक्री भी करते हैं। बकरी, मुरगी, सूअर, गाय–बैल, भैंस इत्यादि का पालन करते हैं तथा इन्हें बिक्री कर अपनी आय में बढ़ोतरी करते हैं।

पहाड़ और जंगलों में रहने वाले सौरिया पहाड़िया आज भी विकास की दौड़ में काफी पीछे हैं। जरूरत है इन्हें जागरूक कर जगाने की तभी ये समुदाय विकास की दौड़ में आगे आ सकते हैं।

कुमारभाग पहाड़िया :

कुमारभाग पहाड़िया, पहाड़िया जनजाति का ही एक संवर्ग है लेकिन इसे अनुसूचित जनजाति का दर्जा प्राप्त नहीं है। यह जनजाति झारखंड राज्य के संथाल परगना में निवास करते हैं, लेकिन इनकी वस्तुस्थिति यह है कि पहाड़िया आदिम जनजाति के तीनों समुदायों में एक कुमारभाग पहाड़िया ही ऐसी आदिम जनजाति है जिन्हें अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में सरकार के द्वारा आज तक नहीं रखा गया है। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर कुमारभाग पहाड़िया की पहचान राजपूत की एक शाखा के रूप में की जाती है जो उपेक्षा के कारण समाज से कट गयी। साक्ष्यों के अनुसार पहाड़िया का रिश्ता सुल्तानाबाद इस्टेट से रहा है। सुल्तानाबाद पाकुड़ अनुमंडल के अन्तर्गत महेशपुर राज और पाकुड़िया के बीच का इलाका है, ऐसा कहा जाता है कि महेशपुर राज के षासक जो राजपूत थे उन्होंने पहाड़िया महिला से विवाह संबंध में बंध गए थे और उनसे संतान की भी प्राप्ति हुई थी। आगे चलकर कुमारभाग अपने आपको राजपूत का वंशज मानने लगा जो आज तक उनके लिए ये कोढ़ साबित होता आ रहा है। जनजाति होते हुए भी इन्हें सरकार के द्वारा जनजाति का दर्जा प्राप्त नहीं हो सका है।

भारत की जनगणना में सौरिया पहाड़िया, माल पहाड़िया को ही जनजाति की अनुसूची में होने का उल्लेख है। यदि सौरिया और माल पहाड़िया को आदिम जनजाति की अनुसूची में रखना जायज है तो कुमारभाग पहाड़िया को भी पहाड़िया जनजाति की श्रेणी से अलग नहीं किया जा सकता। कुमार भाग पहाड़िया का जीवन–यापन पूर्ण रूपेन अनाजों, जंगली पेड़–पौधों, लताओं से प्राप्त फलों, कन्द–मूलों और पशु–पक्षियों से प्राप्त मांस पर आधारित है। इसके अलावा जंगलों से प्राप्त कोंकरी, कुन्दरी, आँवला, शरीफा, इत्यादि के साथ–साथ जलावन की लकड़ियाँ, बाँस, कंद–मूल इत्यादि है। साथ ही साथ जंगली जंगलों से प्राप्त महुआ फूल से देशी शराब तैयार कर खुद अपने पेय के रूप में व हाट बाजार में बेचकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने का प्रयास करते हैं। इसके अलावा जीविका का मुख्य साधन खेती है। ये पहाड़ी भूमि पर बाजरा, अरहर, मकई, घंघरा (बोड़ा) एवं बरबट्टी की खेती करते हैं।

इनकी आबादी पहाड़ों एवं जंगलों को छोड़कर समतल स्थलों पर भी है। यहाँ ये धान, गेहूँ, बरवट्टी इत्यादि की भी खेती करते हैं परन्तु समस्या यह है कि इनकी जमीन अहस्तान्तरणीय होने के बावजूद महाजनों के अधिकार में ही होते हैं। यही कारण है कि खेती से प्राप्त अनाजों पर स्वामित्व प्रायः महाजनों का ही होता है।

कुमारभाग पहाड़िया का भोजन इनकी गरीबी को दर्शाता है, भोजन में ये मुख्यतः भात, मकई, घंघरा, बरबट्टी और बाजरा का उपयोग करते हैं। वनमुर्गी, खरगोश, जंगली सूअर इत्यादि का ये शिकार भी करते हैं, जिनके मांस ये अपने भोजन के रूप में करते हैं।

कुमारभाग पहाड़िया के बीच गोत्र जैसी सामाजिक इकाई का आभाव है। इस समुदाय के परिवार पितृसत्तात्मक और पितृवंशीय होते हैं। इनके बीच एकाकी परिवार की बहुलता होती है तथा संयुक्त परिवार बहुत ही कम देखने को मिलता है। सम्पत्ती का सभी पुत्रों और माँ–बाप में बँटवारा होता है। महिलाएँ पुरूषों की अपेक्षा ज्यादा परिश्रमी होती हैं। माघी पूजा कुमारभाग पहाड़िया एवं माल पहाड़िया की एक महत्वपूर्ण पूजा है। कुमारभाग इसे ओसरी पूजा के रूप में सामूहिक तौर पर मनाते

हैं। माघी पूजा धरती पूजा है और धरती माँ की पूजा का जिक्र डाल्टन ने भूई देवी के रूप में किया है।

कुमारभाग पहाड़िया के बीच राजनैतिक संगठन की इकाई गाँव है। ग्रामीण स्तर पर इनका सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक जीवन संचालित है। गाँव का मुखिया मांझी/सरदार कहलाता है। पहले मांझी/सरदार को सरकारी मान्यता प्राप्त थी और उन्हें भत्ता दिया जाता था, परन्तु अब यह परम्परागत पद समाप्त हो रहा है तथा सारा काम खुद सरकार करती है। माँझी गाँव का अभिभावक माना जाता है और यह वंशानुगत हो गया है। इनका कार्य इनके द्वारा गाँव के किसी भी तरह के विवाद को संपादित करने के लिए किए जाते हैं। इस परम्परागत पंचायत के फैसले का उल्लंघन करने का साहस पहले किसी को नहीं होता था, परन्तु सरकारी पंचायतों की स्थापना के बाद से परम्परागत पंचायते बहुत ही कमजोर हो गयी है।

ग्रामीणों के लिए पंचायत द्वारा दिए गए फैसले को मानना अनिवार्य हो जाता है। पंचायत के फैसले को नहीं मानने वाले का समाज में कोई स्थान नहीं रह जाता है, परिणामस्वरूप पंचायत की अवहेलना करने की हिम्मत कोई नहीं जुटा पाता। पानी यहाँ कि मुख्य समस्या है, अत्यधिक ऊँचाई और दुर्गम रास्ते के कारण इन्हें शुद्ध पानी उपलब्ध नहीं हो पाता है। पहाड़ी, झरनों, छोटी– छोटी ताल–तलैया पर ही ये लोग अपना जल–जीवन निर्वाहन करते हैं। झरने, ताल–तलैया अक्सर दूषित एवं गंदे होते हैं। इन्हीं कारणों से इन्हें मलेरिया, डायरिया, कालाजार, सेरेब्रल मलेरिया, लकवा, कुष्ठ, चेचक, प्लीहा (जॉण्डीस) या अन्य पानी जनित रोगों का होना आम बात है। जिनके कारण इनकी मौत वर्षों से हो रही है।

इनकी पारम्परिक ईलाज पद्धति आज भी जारी है। जंगलों में रहने के कारण पहाड़िया अक्सर अपना ईलाज स्वयं ही जड़ी–बूटी व झाड़–फूंक के द्वारा करते हैं। हर गाँव में एक वैद्य या ओझा होता है, जिन्हें विरासत में ये ज्ञान प्राप्त होता है। वे घने जंगलों से जड़ी– बूटी ढूँढ़कर लाते हैं और विभिन्न बिमारियों का ईलाज करते हैं।

कुमारभाग पहाड़िया की जनसंख्या तीनों प्रकार के पहाड़ियों में सबसे कम है। फिर भी इन्हें अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में नहीं रखा गया इस संबंध में क्षेत्र तथ्यों के संकलन के दौरान कई उत्तरदाताओं ने दो बातों को सूचित किया पहला यह कि संथाल जनजाति का राजनीतिक वर्चस्व है और वे ऐसा नहीं होने देते हैं दूसरा यह कि वोट बैंक की राजनीति में कुमारभाग का कोई विशेष महत्व नहीं है या पहाड़ियों में फूट पड़ जाए, इसलिए इन्हें अनुसूचित जनजाति की श्रेणी से वंचित रखना ही ठीक समझा गया। ऐसा राजनीतिक विश्लेशकों का मानना है। वर्ष 1971 ई० की जनगणना में संथाल परगना जिला में विभागीय आँकड़ों के अनुसार कुमारभाग की जनसंख्या पाकुड़, दुमका, देवघर एवं गोड्डा अनुमंडल के अन्तर्गत कुल जनसंख्या 7568 थी। जबकि हाल ही में वर्ष 2016 में अनुसंधानकर्त्ता के क्षेत्रीय अध्ययन में पाया गया कि पाकुड़ जिला के आमरापाड़ा प्रखंड में कुमारभाग पहाड़िया की 46 परिवारों में लगभग 230 सदस्य ही रह गए हैं, जो काफी गंभीर मसला है। अध्ययन में पाया गया कि अगर इन्हें अपनी जाति के बारे में पूछा जाता है तो वे अपने को माल पहाड़िया बताते हैं, कुमारभाग पहाड़िया बताने से हिचकते हैं। कारण यह है कि अपने को ये कुमारभाग पहाड़िया बताते हैं तो इन्हें लगता है कि सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का लाभ प्राप्त नहीं हो पाएगा।

वस्तुतः कुमारभाग पहाड़िया की आर्थिक स्थिति सौरिया पहाड़िया एवं माल पहाड़िया की अपेक्षा कहीं अधिक दयनीय है।

कुमारभाग पहाड़िया को अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता देने के कई आधार बनते हैं–

- कुमारभाग पहाड़िया का वास स्थान बिल्कुल ही पहाड़िया परिवेश वाले क्षेत्रों में है।
- इनकी भाषा पहाड़िया भाषा (मालतो) है, साथ ही साथ धार्मिक त्योहार, आचार–विचार, रहन–सहन, जन्म एवं शादी–विवाह संस्कार माल पहाड़िया के जैसा ही है। माल पहाड़िया की लड़कियों से कुमारभाग पहाड़िया के लड़को तथा कुमारभाग पहाड़िया की लड़कियों से माल पहाड़िया के लड़कों के साथ विवाह होता है।
- कुमारभाग पहाड़िया की औरतों एवं पुरूषों का पोशाक एवं आभूषण माल पहाड़ियों के जैसे ही होता है।
- इनका सामाजिक जीवन सौरिया एवं माल पहाड़िया के जैसे ही होता है।
- इनके समाज में विवाह तय करने के समय नातेदारी को ध्यान में रखा जाता है। माता–पिता की कई पीढ़ियों तक सम्बन्धियों के बीच विवाह नहीं किए जाते हैं, जो माल एवं सौरिया पहाड़िया में भी ऐसा देखा जाता है।
- ये अपनी पूर्वजों की पूजा करते हैं जो सौरिया एवं माल पहाड़िया भी करते हैं।
- ये माल पहाड़िया एवं सौरिया पहाड़िया जनजातियों से भी अधिक रोगग्रस्त हैं।

अध्ययन उद्देश्य :

उपर्युक्त परिपेक्ष्य में वर्त्तमान अनुसंधान आलेख का उद्देश्य निम्न बातों को पता करना है–

- कुमारभाग, माल एवं सौरिया पहाड़िया की शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विशेषताओं को जानना तथा

इनमें इन तीनों पहाड़ियों के उप–वर्गों में समानताओं को ज्ञात करना।

• सौरिया पहाड़िया एवं माल पहाड़िया जिन्हें अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में रखा गया है की तुलना में कुमारभाग पहाड़िया की शैक्षणिक स्थिति, समस्याएँ एवं स्वास्थ्य की स्थिति को पता करना।

• तुलनात्मक रूप से यह पता करना कि कुमारभाग पहाड़िया की समस्याओं एवं स्थिति के अनुरूप इसे भी अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में रखने के औचित्य को पता करना।

इन उद्देश्यों के संदर्भ में इस अध्ययन की निम्न उपकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं–

➢ कुमारभाग पहाड़िया की शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विषेशता माल पहाड़िया एवं सौरिया पहाड़िया के ही समान है।

➢ कुमारभाग का जीवन एवं जीवन परिस्थितियाँ लगभग पहाड़िया के अन्य दो उप–वर्गों के ही समान है।

➢ पहाड़ियो में अपने को सबसे उच्च सिद्ध करने के कारण तथा इस क्रम में अपने को हिन्दू जाति के राजपूत श्रेणी से जोड़ने के कारण कुमारभाग पहाड़िया का वि–जनजातिकरण हुआ।

कुमारभाग पहाड़िया अन्य दो पहाड़िया जिन्हें अनुसूचित जनजाति का दर्जा मिला है से प्रभावित होकर जनजातिकरण के लिए आकर्षित हो रहे हैं।

अध्ययन पद्धति :

वर्त्तमान शोध–आलेख का विश्लेषण वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर किया गया है एवं यह एक अनुभवाश्रित अध्ययन है।

अध्ययन समग्र :

वर्त्तमान अध्ययन का समग्र कुमारभाग पहाड़िया, माल पहाड़िया एवं सौरिया पहाड़िया के सदस्य हैं जो मुख्यतः झारखण्ड एवं बिहार राज्यों में अवस्थित हैं।

निदर्शन एवं निदर्श :

समग्र से इकाईयों का चुनाव गैर संभावनापूर्ण निदर्शन के सुविधाजनक प्रणाली के द्वारा की गई। इस निदर्शन प्रणाली के द्वारा प्रत्येक पहाड़िया समूह से 100 इकाईयों कुल 300 इकाईयों का निदर्श के रूप में चयन किया गया। चूँकि; प्रयुक्त निदर्शन प्रणाली में अभिमति आने की संभावना होती है। इससे बचने के लिए पूर्ण तटस्थता की नीति अपनाई गई एवं वगैर किसी अभिमति के प्रतिनिधिपूर्ण इकाईयों का चयन किया गया।

तथ्यों का संकलन :

निदर्श के रूप में चुनी गई इकाईयों से तथ्यों का संकलन गहन अध्ययन के पश्चात् तैयार किए गए साक्षात्कार–अनुसूचि के माध्यम से किया गया।

पहाड़िया के तीनों उप–विभागों के अधिक वस्तुनिष्ठ जानकारी के लिए अवलोकन विधि की भी सहायता ली गई ताकि इनके जीवन–शैली एवं समस्याओं को प्रत्यक्ष रूप से समझा जा सके।

तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

संकलित तथ्यों को उनकी विशेषताओं के अनुसार वर्गीकृत किया गया एवं अध्ययन उद्देश्य के अनुरूप विभिन्न तालिकाओं में प्रस्तुत किया गया। तथ्यों के विश्लेषण के लिए उपयुक्त सांख्यिकी विधि, जैसे– प्रतिशत, प्रतिशतांक, माध्य का प्रयोग किया गया तथा प्रथम दृष्टया स्पष्टीकरण के लिए ग्राफ के द्वारा भी तथ्यों का प्रस्तुतिकरण किया गया। विभिन्न तालिकाओं में प्रस्तुत तथ्यों के आधार पर एवं सांख्यिकी परिणामों को ध्यान में रखते हुए इनकी व्याख्या की गई तथा विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकाले गए।

वर्त्तमान अध्ययन में सबसे पहले उत्तरदाताओं की व्यक्तिक एवं सामाजिक विशेषताओं को ज्ञात किया गया। इस क्रम में आयु, परिवार की शैक्षणिक स्थिति, आय, व्यवसाय (प्राथमिक एवं द्वितीयक), ऋणग्रस्तता, बच्चों की शिक्षा (विद्यालय में दाखिला), विद्यालय में दाखिला नहीं लेने के कारण सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति, स्वास्थ्य एवं सफाई के विषय में जनकारी प्राप्त की गई।

निम्न तालिका संख्या– 01 में आयु समूहों के वितरण को अवलोकित किया जा सकता है–

तालिका संख्या – 01

आयु विश्लेषण

आयु समूह	कुमारभाग पहाड़िया	माल पहाड़िया	सौरिया पहाड़िया	कुल
20–30 वर्ष	22 (22%)	28 (28%)	30 (30%)	80 (26.66%)
31–41 वर्ष	45 (45%)	42 (42%)	38 (38%)	125 (41.66%)
42 वर्ष एवं अधिक	33 (33%)	30 (30%)	32 (32%)	95 (31.66%)
कुल	100 (100%)	100 (100%)	100 (100%)	300 (100%)

आयु संबंधी आँकड़ों को सर्वप्रथम 33 एवं 66 प्रतिशतांक के अनुरूप तीन आयु समूहों जिनमें निम्न आयु समूह (20–30 वर्ष), मध्य आयु समूह (31–41 वर्ष) एवं उच्च आयु समूह (42 वर्ष एवं अधिक) में विभाजित किया गया।

आयु विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि 31–41 वर्ष (मध्य आयु समूह) के उत्तरदाता की संख्या 125 (41. 66 प्रतिशत) सर्वाधिक है एवं 20–30 वर्ष (निम्न आयु समूह) की संख्या 80 (26.66 प्रति0) सबसे कम है। तीनों जनजातियों की आयु की तुलना में सर्वाधिक कुमारभाग पहाड़िया 45 (45 प्रति0) 31–41 वर्ष (मध्य आयु समूह) सर्वाधिक है जबकि 20–30 वर्ष (निम्न आयु समूह) 22 (22 प्रति0) में भी कुमारभाग पहाड़िया ही हैं जो सबसे कम है।

तीनों पहाड़िया की शैक्षणिक स्थिति में सर्वाधिक निरक्षरों की संख्या 290 (90.62 प्रति0) सौरिया पहाड़िया की है। तीनों पहाड़िया के महिला एवं पुरूषों की शैक्षणिक स्थिति को अलग कर देखा जाए तो पता चलता है कि सबसे अधिक निरक्षर पुरूषों की संख्या कुमारभाग पहाड़िया में है जिनकी संख्या 138 (45.84 प्रति0) है और महिलाओं में माल पहाड़िया जिनकी संख्या 125 (40.45 प्रति0) है। तालिका के आँकड़ों के आधार पर कुमारभाग पहाड़िया में निरक्षरों की संख्या 88.70 प्रति0 है, जबकि माल पहाड़िया में निरक्षरों की संख्या 85.76 प्रति0 है। तीनों श्रेणियों में एक भी पहाड़िया उच्च शिक्षा (स्नातकोत्तर) प्राप्त नहीं किया है।

तालिका संख्या – 03

आय

आय (रू०)	कुमारभाग पहाड़िया	सौरिया पहाड़िया	माल पहाड़िया	कुल
रू० 2000–4000	60 (60%)	40 (40%)	55 (55%)	155 (51.66%)
रू० 4000–6000	25 (25%)	35 (35%)	38 (38%)	98 (32.66%)
रू० 6000–8000	15 (15%)	12 (12%)	04 (04%)	31 (10.33%)
रू० 8000–10000	--	10 (10%)	03 (03%)	13 (4.33%)
रू० 10000–12000	--	03 (03%)	--	03 (1%)
रू० 12000–14000	--	--	--	--
कुल	100 (100%)	100 (100%)	100 (100%)	300 (100%)

उपर्युक्त तालिका संख्या–03 से पता चलता है कि कुमारभाग पहाड़िया की आर्थिक स्थिति अन्य दोनों सौरिया एवं माल पहाड़िया की तुलना में ज्यादा दयनीय है।

तालिका संख्या – 02

परिवार की शैक्षणिक स्थिति

शैक्षणिक स्थिति	कुमारभाग पहाड़िया			माल पहाड़िया			सौरिया पहाड़िया		
	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल
निरक्षर	138 (45.84%)	129 (42.85%)	267 (88.70%)	140 (45.50%)	125 (40.45%)	265 (85.76%)	155 (48.43%)	135 (42.18%)	290 (90.62%)
साक्षर	08 (2.65%)	03 (0.99%)	11 (3.65%)	06 (1.94%)	04 (1.29%)	10 (3.23%)	06 (1.87%)	02 (0.62%)	08 (2.5%)
प्राथमिक	04 (1.32%)	02 (0.66%)	06 (1.99%)	07 (2.26%)	03 (0.97%)	10 (3.23%)	03 (0.93%)	01 (0.31%)	04 (1.25%)
मिडिल	02 (0.66%)	01 (0.33%)	03 (0.99%)	04 (1.29%)	03 (0.97%)	07 (2.26%)	03 (0.93%)	02 (0.62%)	05 (1.56%)
माध्यमिक	05 (1.66%)	03 (0.99%)	08 (2.65%)	06 (1.94%)	04 (1.29%)	10 (3.23%)	03 (0.93%)	04 (1.25%)	07 (2.18%)
उच्च माध्यमिक	03 (0.99%)	01 (0.33%)	04 (1.32%)	04 (1.29%)	02 (0.64%)	06 (1.94%)	02 (0.62%)	02 (0.62%)	04 (1.25%)
स्नातक	01 (0.33%)	01 (0.33%)	02 (0.66%)	01 (0.32%)	--	01 (0.32%)	02 (0.62%)	--	02 (0.62%)
स्नतकोत्तर	--	--	--	--	--	--	--	--	--
कुल	161 (53.48%)	140 (46.51%)	301 (100%)	168 (54.36%)	141 (45.63%)	309 (100%)	174 (54.37%)	146 (45.62%)	320 (100%)

अतः उपरोक्त तालिका के आधार पर पता चलता है कि तीनों पहाड़िया की शैक्षणिक स्थिति बहुत ही दयनीय है।

तीनों श्रेणियों में सर्वाधिक आय 10 प्रति0 (रू० 8000 – रू०10,000/–) एवं 03प्रति0 (रू० 10,000– 12,000/–) सौरिया

पहाड़िया की है, जबकि सबसे कम 60 प्रति0 (रू० 2000–4000/–) कुमारभाग पहाड़िया की है।

तालिका संख्या – 04 (क)

व्यवसाय (प्राथमिक)

व्यवसाय	कुमारभाग पहाड़िया	सौरिया पहाड़िया	माल पहाड़िया	कुल
मजदूरी	80 (80%)	75 (75%)	78 (78%)	233 (77.66%)
कृशि	18 (18%)	22 (22%)	20 (20%)	60 (20%)
सरकारी नौकरी	02 (02%)	03 (03%)	02 (02%)	07 (2.33%)
कुल	100 (100%)	100 (100%)	100 (100%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका संख्या– 04 (क) से पता चलता है कि तीनों प्रकार के पहाड़िया समुदाय की पेशागत स्थिति लगभग समान है। फिर भी ज्यादातर कुमारभाग पहाड़िया अपनी जीविकोपार्जन को मजदूरी के रूप में अपनाया है, जिनकी संख्या 80 प्रति0 है, जो उनकी दयनीय आर्थिक स्थिति को दर्शाता है।

तालिका संख्या – 04 (ख)

व्यवसाय (द्वितियक)

व्यवसाय	कुमारभाग पहाड़िया	सौरिया पहाड़िया	माल पहाड़िया	कुल
देशी शराब बेचना	20 (20%)	30 (30%)	26 (26%)	76 (25.33%)
देशी शराब (महुआ) एवं चखना बेचना	12 (12%)	25 (25%)	20 (20%)	57 (19%)
सूअर पालन	05 (05%)	10 (10%)	06 (06%)	21 (7%)
मुर्गी पालन	18 (18%)	15 (15%)	14 (14%)	47 (15.66%)
बकरी पालन	25 (25%)	12 (12%)	15 (15%)	52 (17.33%)
गाय पालन	20 (20%)	08 (08%)	19 (19%)	47 (15.66%)
कुल	100 (100%)	100 (100%)	100 (100%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका संख्या– 04(ख) से स्पष्ट होता है कि सौरिया एवं माल पहाड़िया जनजातियों के समान ही कुमारभाग पहाड़िया भी अपनी पेशागत स्थिति उन्हीं के अनुरूप अपनाए हुए है।

तालिका संख्या – 05

ऋणग्रस्तता

ऋणग्रस्तता	कुमारभाग पहाड़िया	माल पहाड़िया	सौरिया पहाड़िया	कुल
ऋणग्रस्त	96 (96%)	98 (98%)	97 (97%)	291 (97%)
ऋणग्रस्त नहीं	04 (04%)	02 (02%)	03 (03%)	09 (03%)
कुल	100 (100%)	100 (100%)	100 (100%)	300 (100%)

उपर्युक्त तालिका संख्या–05 से स्पष्ट होता है कि 300 उत्तरदाताओं में 291 (97 प्रति0) उत्तरदाता ऋणग्रस्त हैं जो एक समान रूप से तीनों की दयनीय स्थिति को दर्शाती है।

तालिका संख्या – 06

बच्चों की शिक्षा (विद्यालय में दाखिला)

विद्यालय में नामांकित बच्चे	कुमारभाग पहाड़िया	माल पहाड़िया	सौरिया पहाड़िया	कुल
नामांकित	05 (05%)	08 (08%)	06 (06%)	19 (6.33%)
नामांकित नहीं	95 (95%)	92 (92%)	94 (94%)	281 (93.66%)
कुल	100 (100%)	100 (100%)	100 (100%)	300 (100%)

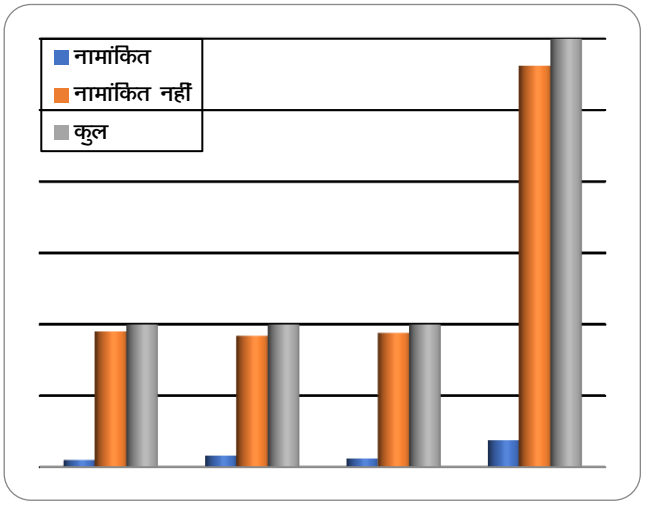

ग्राफ संख्या–02

उपर्युक्त तालिका संख्या–06 से पता चलता है कि कुमारभाग पहाड़िया के ज्यादातर बच्चे विद्यालय में नामांकित नहीं

हैं। सर्वाधिक नामांकित बच्चे जिनकी संख्या 8 प्रतिशत है जो माल पहाड़िया से आते हैं और सबसे कम 05 प्रतिशत कुमारभाग पहाड़िया से आते हैं।

तालिका संख्या – 07

विद्यालय में दाखिला नहीं लेने का कारण

कारण	कुमारभाग पहाड़िया	माल पहाड़िया	सौरिया पहाड़िया	कुल
आय की कमी	80 (80%)	85 (85%)	82 (82%)	247 (82.33%)
बच्चों से कमाई की विवशता	18 (18%)	12 (12%)	14 (14%)	44 (14.66%)
सरकार की उदासीनता	02 (02%)	03 (03%)	04 (04%)	09 (03%)
कुल	100 (100%)	100 (100%)	100 (100%)	300 (100%)

उपर्युक्त तालिका संख्या–07 में उत्तरदाता अपने बच्चों का विद्यालय में दाखिला नहीं लेने का कारण सबसे अधिक 247 (82.33 प्रति0) आय की कमी बताया। जबकि तीनों श्रेणियों की पहाड़िया में कुमारभाग पहाड़िया के बच्चों का विद्यालय में दाखिला नहीं लेने का कारण आय की कमी 80 प्रति0 एवं बच्चों से कमाई की विवशता 18 प्रति0 बताया गया है। जो सरासर सरकार एवं जनप्रतिनिधियों के द्वारा उपेक्षित किया गया है।

तालिका संख्या – 08

सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति

संस्थाएँ	कुमारभाग पहाड़िया	माल पहाड़िया	सौरिया पहाड़िया
शारीरिक विशेषता	नाटा कद, चौड़ी नाक, दीर्घ कपाल, हल्का भूरा रंग, हल्के घुंघराले बाल	नाटा कद, चौड़ी नाक, दीर्घ कपाल, हल्का भूरा रंग, हल्के घुंघराले बाल	सामान्य कद, चौड़ी नाक, साँवला रंग, घुंघराले बाल
निवास	पहाड़ी एवं समतल इलाके	पहाड़ी की चोटियों एवं हरे भरे पहाड़ी ढलान तथा समतल	पहाड़ी की चोटियों एवं हरे भरे पहाड़ी ढलान तथा समतल
आवास	बाँस खर पतवार तथा मिट्टी से निर्मित्त छोटी आयताकार झोपड़ियाँ	बाँस खर पतवार तथा मिट्टी से निर्मित्त छोटी आयताकार झोपड़ियाँ	बाँस खर पतवार तथा मिट्टी से निर्मित्त छोटी आयताकार झोपड़ियाँ
परिधान एवं आभूषण	पुरूषों के लिए– लूंगी, गंजी, गमछी, कमीज, महिलाओं के लिए– साड़ी, ब्लाउज, पेटीकेट परम्परागत आभूषण	पुरूषों के लिए– धोती, लूंगी, गंजी, गमछी महिलाओं के लिए– साड़ी, ब्लाउज, घंघरा और परम्परागत आभूषण	पुरूषों के लिए– धोती, लूंगी, गंजी, गमछी महिलाओं के लिए– साड़ी, ब्लाउज, घंघरा और परम्परागत आभूषण
परिवार की सत्ता एवं स्वरूप	पितृसत्तात्मक, पितृवंशीय एवं एकाकी	पितृसत्तात्मक, पितृवंशीय एवं एकाकी	पितृसत्तात्मक, पितृवंशीय एवं एकाकी
गोत्र	गोत्र का अभाव	गोत्र का अभाव	गोत्र का अभाव
धर्म एवं विश्वास	पूर्वजों की पूजा भूईं देवी (धरती पूजा), माघी पूजा	पूर्वजों की पूजा, पुर्नजन्म में विश्वास, ग्राम गोसाई मुख्य देवता, माघी पूजा	पूर्वजों की पूजा एवं पुर्नजन्म में विश्वास, जनजातीय धर्म, माघी पूजा
जादू टोना में विश्वास	हाँ	हाँ	हाँ
ग्रामीण प्रधान	माँझी, ओझा	माँझी	माँजिये (माँझी)
भाषायी समूह	माल्टो	माँउड़ो	माल्टो

उपर्युक्त तालिका संख्या–08 से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि इन तीनों श्रेणियों की पहाड़िया जनजातियों की सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति लगभग एक समान है, जिनमें किसी भी तरह की विविधता दिखाई नहीं पड़ती है।

कुमारभाग पहाड़िया माल पहाड़िया सौरिया पहाड़िया

तालिका संख्या – 09

स्वच्छ जल की उपलब्धता एवं स्वच्छ जल आपूर्त्ति कार्यक्रम

स्वच्छ जल आपूर्त्ति कार्यक्रम	कुमारभाग पहाड़िया	माल पहाड़िया	सौरिया पहाड़िया	कुल
स्वच्छ जल की आपूर्त्ति	0	0	0	0
स्वच्छ जल की अनुपलब्धता	100 (100%)	100 (100%)	100 (100%)	300 (100%)
चापाकल की अनुपलब्धता	100 (100%)	100 (100%)	100 (100%)	300 (100%)
चापाकल की उपलब्धता (दूरी प्रत्येक चापाकल की 1.5 किमी०)	07 (07%)	05 (05%)	08 (08%)	20 (6.66%)
कुल	100 (100%)	100 (100%)	100 (100%)	300 (100%)

उपर्युक्त तालिका संख्या–09 से स्पष्ट होता है कि तीनों श्रेणियों के पहाड़िया को स्वच्छ जल की आपूर्त्ति नहीं होती है एवं चापाकल की उपलब्धता दर्शाता है कि इन्हें जल की प्राप्ति के लिए काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इससे पता चलता है कि इन्हें अशुद्ध एवं गंदे जल से जीवन–निर्वाहन करना पड़ता है। फलस्वरूप ये विभिन्न बिमारियों से ग्रसित हो जाते हैं।

तालिका संख्या – 10

भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त ईंधन

ईंधन	कुमारभाग पहाड़िया	माल पहाड़िया	सौरिया पहाड़िया	कुल
लकड़ी एवं जंगली पत्ता	79 (79%)	78 (78%)	74 (74%)	231 (77%)
गोयठा	18 (18%)	15 (15%)	22 (22%)	55 (18.33%)
कोयला	02 (02%)	05 (05%)	02 (02%)	09 (03%)
एल०पी०जी० (गैस)	01 (01%)	02 (02%)	02 (02%)	05 (1.66%)
कुल	100 (100%)	100 (100%)	100 (100%)	300 (100%)

उपर्युक्त तालिका संख्या–10 से स्पष्ट होता है कि तीनों श्रेणियों के पहाड़िया भोजन पकाने में प्रयुक्त ईंधन सर्वाधिक 231 (77 प्रति0) लकड़ी एवं जंगली पत्ता का प्रयोग करते हैं एवं सिर्फ 1 (1 प्रति0) कुमारभाग पहाड़िया एल0पी0जी0 (गैस) का प्रयोग करते हैं।

तालिका संख्या – 11

विभिन्न बीमारीयों से ग्रसित उत्तरदाता

विभिन्न बीमारीयों के नाम	कुमारभाग पहाड़िया	माल पहाड़िया	सौरिया पहाड़िया	कुल
पेट से संबंधित बीमारी	40 (40%)	38 (38%)	32 (32%)	110 (36.66%)
मलेरिया	08 (08%)	10 (10%)	12 (12%)	30 (10%)
कालाजार	02 (02%)	05 (05%)	08 (08%)	15 (05%)
प्लीहा (जॉण्डीस)	15 (15%)	18 (18%)	20 (20%)	53 (17.66%)
टी०बी०	05 (05%)	03 (03%)	04 (04%)	12 (04%)
चर्म रोग	18 (18%)	22 (22%)	14 (14%)	54 (18%)
जोड़ों से संबंधित बीमारी	12 (12%)	04 (04%)	10 (10%)	26 (8.66%)
कुल	100 (100%)	100 (100%)	100 (100%)	300 (100%)

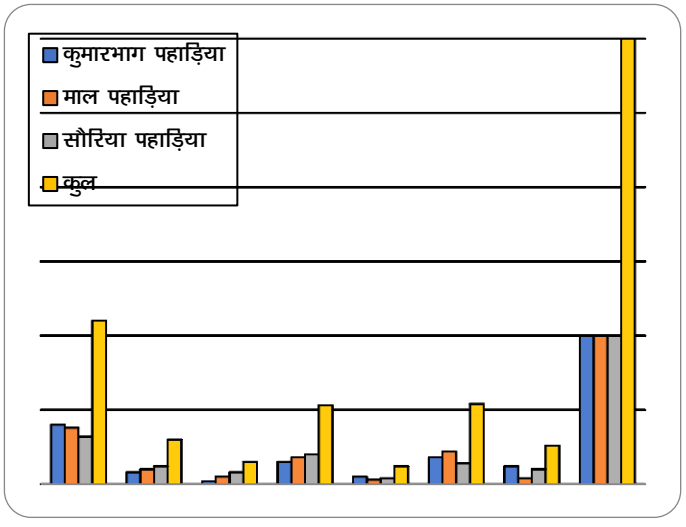

ग्राफ संख्या–04

उपर्युक्त तालिका संख्या–11 में तीनों श्रेणियों के उत्तरदाताओं का विभिन्न बीमारियों से ग्रसित होना दर्शाता है, सर्वाधिक उत्तरदाता पेट से संबंधित बीमारीयों से ग्रसित हैं, जिनकी संख्या 110 (36.66 प्रति0 है। 54 (18प्रति00 उत्तरदाता चर्म रोग एवं 53 (17.66प्रति0) प्लीहा (जॉण्डीस) रोग से ग्रसित हैं जो दर्शाता है कि शुद्ध जल की अनुपलब्धता इन जटिल बीमारियों का कारण है। इन बीमारियों से लड़ते–लड़ते अंत में इन लोगों को काल के गाल में समाना पड़ता है।

सुझाव :

इनके बिमारियों के रोकथाम के लिए इन्हें आधुनिक चिकित्सा पद्धति की ओर जागरूक करने की आवश्यकता है।

इन्हीं सब समानताओं के आधार पर यह आवश्यक है कि कुमारभाग पहाड़िया को अनुसूचित जनजाति की मान्यता देने पर सरकार को विचार करनी चाहिए ताकि ये भी अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में आकर अपना जैविक हक प्राप्त कर सके और सरकार द्वारा प्रदत्त अनुदान और लाभ को प्राप्त कर अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठा सके। इसके लिए सामाजिक कार्यकर्त्ता, एन०जी०ओ०, सरकारी सेवक, सामाजिक संस्थाओं एवं जनप्रतिनिधियों को चाहिए कि इनके हक की प्राप्ति के लिए सरकार के समक्ष पूरजोर आवाज उठाएँ ताकि इन्हें अपना हक प्राप्त हो सके।

सरकार के स्तर पर कुमारभाग पहाड़िया को अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने के लिए विचार किया जा रहा है।

सारांश एवं निष्कर्ष :

उपर्युक्त विश्लेषण से यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि कुमारभाग पहाड़िया की शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विशेषताएँ समान हैं ही साथ ही साथ इनकी समस्याएँ भी समान हैं। शिक्षा के क्षेत्र में तो कुमारभाग पहाड़िया में अपेक्षाकृत ज्यादातर लोग निरक्षर हैं। पहाड़िया के तीनों उप–वर्गों के सामाजिक संगठन, प्रथाएँ, खान–पान बिल्कुल एक जैसे हैं। शुद्ध पेयजल की उपलब्धता पहाड़िया के किसी भी उप–वर्ग को प्राप्त नहीं हैं। शारीरिक रूग्नता एवं संक्रमित बीमारियों से समान रूप से कुमारभाग पहाड़िया, माल पहाड़िया एवं सौरिया पहाड़िया ग्रसित हैं। तीनों पहाड़िया के उप–वर्गों में अधिक आभाव एवं ऋणग्रस्तता की स्थिति समान रूप से बनी हुई है, जिसके कारण उनके बच्चे विद्यालय में नामांकित नहीं होते या प्रारंभिक कक्षा में पढ़ाई छोड़ देते हैं। इस तरह कुमारभाग पहाड़िया हर तरह से वंचित एवं दमित हैं।

अनुसूचित जनजाति के श्रेणी से इन्हें कुछ ऐतिहासिक कारणों से वंचित कर दिया गया है। इस कारण अनुसूचित जनजाति को मिलनेवाली कल्याणकारी कार्यक्रमों का लाभ इन्हें नहीं मिल पाता है और इनकी स्थिति अपने दोनों पहाड़िया संवर्गों सौरिया पहाड़िया एवं माल पहाड़िया जिन्हें की अनुसूचित जनजाति का दर्जा प्राप्त है से भी खराब स्थिति में है। ऐसी स्थिति में इस अनुसंधान आलेख के द्वारा यह सुझाव दिया जाता है कि कुमारभाग पहाड़िया को भी अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया जाए, ताकि इनके विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके।

संदर्भ :

रावत, हरिकृष्ण (2002): *मानवशास्त्र विश्वकोष,* जयपुर

पाण्डेय, गया (2007): *भारतीय जनजातीय संस्कृति,* नई दिल्ली

सिन्हा, कुमार (2000): *सामान्य मानवशास्त्र,* पटना

बाजपेयी, अनुप : *पूर्वी भारत के पहाड़िया*

मेली, ओ०(1990): *संथाल परगना बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर,* कलकत्ता

विद्यार्थी, प्रसाद (1960): *बिहार के आदिवासी,* पटना

Bailey, F.G.(1960): *Tribe, Caste and Nation,* 2nd ed. Manchester, Manchester Universtiy Press

Gillin, Gillin (1942): *An Introduction to Sociology*, Macmillan, the University of Michigan

Majumdar, D.N. (1944): *Races & Cultures of India*

Robert, Redfield (1941): *The Folk Culture of Yucatan*

Risley, Herbert Hope (1891): *The study of Ethnology in India*

Sunday Times of India: April 15, 2018, Patna, P 10